M.A.(Education),part-1,paper-VI,
Presented by Dr.Pallavi
Topic- अनुसंधान की समस्या का स्वरूप (The Form of Research Problems)

4.0 समस्या का स्वरूप(Form of Problems)

अनुसन्धान में किसी समस्या का वैज्ञानिक अन्वेषण सम्मिलित है। इसमें नवीन ज्ञान की खोज या समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाता है । वैज्ञानिक विधि से क्रमवद्ध , सोद्देश्य एवं सुनियोजित होती है । इस आधार पर कहा जा सकता है कि अनुसन्धान की समूची प्रक्रिया एक तार्किक प्रक्रिया है। इसमें उन तथ्यों को स्थान नहीं दिया जाता जो तर्क की कसौटी प्रक्रिया है । इसीलिए अनुसंधान में तार्किक प्रक्रिया प्रदत्तों की ठोस भूमि पर आधारित होती है। इसी तथ्य की पुष्टि रैडमैन की अनुसन्धान सम्बन परिभाषा से स्पष्ट होती है। रैडमैन ने लिखा है कि, "अनुसंधान नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्थित प्रयास है।"
सी. सी. क्राफोर्ड ने अनुसन्धान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि अनुसंधान किसी समस्या के अच्छे समाधान के लिए क्रमबद्ध तथा शुद्ध चिन्तन एवं विशिष्ट उपकरणों के प्रयोग की एक विधि है।

ये परिभाषाएँ स्पष्ट करती है कि अनुसंधान किसी समस्या के समाधान या नवीन ज्ञान प्राप्त करने को एक वैज्ञानिक एवं शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों से जीवन भर शिक्षा प्राप्त करता रहता है। वह अपने दैनिक जीवन में अपने पर्यावरण के साथ अन्तः क्रिया करते हुए अनेकानेक अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों से जो ज्ञान प्राप्त होता है। वही व्यापक अर्थ में शिक्षा हैं। विद्यालय जीवन में प्राप्त शिक्षा भी इस व्यापक शिक्षा का एक अंग है। इस प्रकार शिक्षा पूरी तरह व्यावहारिक तथा जीवनोपयोगी होती है । शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो जन्मकाल तथा प्रकृति-प्रदत्त शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा व्यक्ति को सभ्य एवं सुसंस्कृत नागरिक बनाती है। शिक्षा के इतने महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण आज समाज में शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। आज समाज का रूप अत्यधिक जटिल होता जा रहा है। इन जटिलता के कारण जीवन के रूप में भी अनेक परिवर्तन हो रहे है। इन जटिलताओं के कारण अनेक समस्याएं जन्म लेती है। इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा शास्त्रियों के द्वारा अपनाई जाने वाली वैज्ञानिक विधियों को शैक्षिक अनुसंधान कहा जाता है।

शैक्षिक अनुसन्धान को परिभाषित करते हुए एम. एम. ट्रेवर्स ने लिखा है कि, "शैक्षिक अनुसन्धान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थियों में एक व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान के विकास की ओर अग्रसर होती है। इसी से सम्बन्धित एक परिभाषा हैमन जूनियर ने दी है- "संक्षेप में शैक्षिक अनुसंधान व्यवहार-विज्ञान का एक अंग है, जिसका प्रयोजन मानव व्यवहार समझना, उसकी व्याख्या तथा भविष्यवाणी करना और कुछ अंश में उसे नियन्त्रित करना होता है ।

उपरोक्त दोनों परिभाषाएँ शैक्षिक अनुसन्धान को व्यवहार-विज्ञान तक सीमित करके इसके क्षेत्र को संकुचित बना देती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि व्यक्ति के व्यवहार पक्ष को समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। किन्तु शिक्षा का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक होने शैक्षिक अनुसंधान को मानव व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष तक ही सीमित नहीं कर सकते हैं।

बेस्ट महोदय ने शैक्षिक अनुसंधान को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से सम्बन्धित करते हुए लिखा है कि "शिक्षा के क्षेत्र में हम अनुसन्धान को सीखने-सिखाने के प्रक्रम एवं उन परिस्थितियों को जिनमें यह प्रक्रम मानते हैं। "इन्होंने शिक्षा की व्यापकता को संकीर्ण

करते हुए केवल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया शैक्षिक अनुसन्धान केवल कक्षा में अध्ययन तथा शिक्षण तक ही सीमित माना है। शिक्षा इससे भी कहीं अधिक व्यापक प्रक्रिया है। यह जीवन पर्यन्त तथा हर क्षण प्रत्येक स्थिति में चलती रहती है। अतएव शैक्षिण अनुसंधान को हम संकीर्ण नहीं कह सकते।

हैरिस के विश्व कोष में शैक्षिक अनुसंधान की परिभाषा में लिखा है कि "शैक्षिक अनुसंधान समझे का एक सुव्यवस्थित प्रयास होता है जो किसी ऐसी जटिल शैक्षिक समस्या से सम्बन्ध आवश्यकता या अनुमानित कठिनाई से प्रेरित होता है, जिसका महत्त्व केवल व्यक्तिगत एवं तात्कालिक नहीं होता और जो समस्यात्मक ढंग से वर्णित होता है।

हैरिस के विश्व कोप में खो गई उपरोक्त परिभाषा अनुसन्धान की व्यापकता को प्रदर्शित करती है। इसमें सुव्यवस्थित प्रयास एक शैक्षिक अनुसन्धान के वैज्ञानिक रूप को प्रदर्शित करता है। इन्होंने शैक्षिक अनुसन्धान को किसी एक क्षेत्र से न जोड़कर 'शैक्षिक समस्या' शब्द का प्रयोग किया है जो शिक्षा के विविधि क्षेत्रों से सम्बधित हो सकती है। शैक्षिक अनुसंधान शैक्षिक समस्या से प्रेरित होता है। यह कथन बहुत उपर्युक्त है, क्योंकि अनुसंधान को जन्म देने वाली समस्या ही होती है। यह परिभाषा शैक्षिक अनुसंधान के रूप को अधिक स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करती है।

यहाँ पर हम डॉ. एम. वर्मा की अनुसंधान से सम्बन्धित परिभाषा पर विचार कर सकते हैं। जो शैक्षिक अनुसन्धान के स्वरूप पर भी प्रकाश डालती है-"अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है नये ज्ञान को प्रकाश में लाती है अथवा पुरानी त्रुटियों एवं ज्ञान धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में वर्तमान ज्ञान कोष में वृद्धि करती है। "इन परिभाषाओं में अनुसन्धान की प्रकृति स्पष्ट हो जाती है। शैक्षिक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक विधियों के द्वारा शिक्षा के व्यापक क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली विशिष्ट समस्याओं का समाधान तथा उन प्रश्नों का उत्तर स्तर का होता है जो सहज में प्राप्त नहीं होते हैं। अनुसंधान द्वारा अर्जित ज्ञान उच्च स्तर का होता है। यह ज्ञान केवल तथ्यों से हो सम्बन्धित नहीं होता है बल्कि इसका सम्बन्ध उन आधारभूत सिद्धान्तों से होता है। जो तथ्यों एवं घटनाओ से सम्बन्धित प्रश्न 'कैसे और 'क्यों की व्याख्या करने में सहायता करते हैं। शैक्षिक अनुसंधान की एक प्रमुख विशेषता है कि इसमें वैज्ञानिक विधिक का अनुसरण होता ,जो कि डीवी की चिन्तन प्रक्रिया के समरूप है, जिसमें डीवी के मतानुसार निम्नलिखित चरण होते हैं

1 . अनुभूव कठिनाई- अनुसंधान अनुभूत कठिनाई के साथ आरम्भ होता है। अनुभूत कठिनाई शिक्षा प्रक्रिया के चलते समय अनुभव हो सकती है या किसी घटना को समझते समय पैदा हो सकती है। इन अनुभूत कठिनाइयों को ही 'शोध समस्या' कहते हैं।

2. प्रकल्पना की रचना- अपने पूर्व अध्ययन या अर्जित अनुभवों के आधार पर आगमन विधि से शोधकर्ता समस्या के हल का पूर्व अनुमान लगाता है। इसी को परिकल्पना की रचना कहते हैं।

3. समस्या की पहचान और परिभाषा- समस्या को स्पष्ट और सूक्ष्म ढंग से निर्धारित करना होता है तथा स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत करना होता है।

4. परिकल्पना के प्रमाण- परिकल्पना के सत्य होने की स्थिति में अनुसरण करने वाले परिणामों के बारे में निगमन विधि की सहायता से शोध कर अनुमान लगता है और इसी की पुष्टि के लिए वह आँकड़े एकत्रित करता है। जो उन अनुमानित परिणामों को स्वीकृत या अस्वीकृत करने का आधार प्रस्तुत करते हैं। इसके तदनुसार प्राकल्पना को स्वोकृत या अस्वीकृत किया जाता है।

5. परिकल्पना की जाँच- परिकल्पना की सहायता या असत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता के स्वीकृत आँकड़ों का विश्लेषण करता है ।

6. सामान्यीकरण- प्रकल्पना के स्वीकृत होने पर इसको सामान्य सिद्धांत का रूप दिया जाता है ।

चिन्तन के ये चरण आवश्यक नहीं है कि इसी क्रम में पाये जायें क्योंकि शोधकर्ता को इन चरणों में कई बार आगे पीछे आना-जाना पड़ता है ।वैज्ञानिक विधि की मूल बात यह है कि उसमें आगमन-निगमन प्रक्रिया है ।

4.1 अनुसन्धान सामान्य प्रकृति(General Nature of Research)

वास्तविक अर्थ में शैक्षिक अनुसंधान की प्रकृति की आधारभूत बात यह है कि शैक्षिक अनुसंधान शैक्षिक घटनाओं से अंन्तः सम्बद्ध प्रक्रियाओं की अवस्थित खोज तथा विश्लेषण की वैज्ञानिक पद्धति है । इस अर्थ में शैक्षिक अनुसंधान की प्रकृति वैज्ञानिक हैं । विज्ञान का संबंध यथार्थ सत्य तथा वास्तविक ज्ञान से होता है । यही बात कुछ अंशों में शैक्षिक अनुसंधान के संबंध में कही जा सकता है । शैक्षिक अनुसंधान सदैव शुद्ध रूव से वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता है, क्योंकि यह सदैव प्रयोग एवं अनुभव पर आश्रित आगमनात्मक तथा शुद्ध एवं निश्चित नहीं होता। शैक्षिक अनुसंधान की प्रकृति निम्नलिखित तथ्यों द्वारा प्रदर्शित की जा सकती है -

1. शैक्षिक अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण बौद्धिक क्रिया है। शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले शोध कार्य निउदेश्य नहीं होते हैं।

2. शैक्षिक अनुसंधान में व्यावहारिक समस्याओं पर के समाधान पर अधिक बल दिया जाता है। इसमें शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं के समाधान को प्राथमिकता दी जाती है।

3. शिक्षा का क्षेत्र अन्तः अनुशासनिक क्षेत्र है । अतः इसमें अन्तः अनुशासनात्मक पद्धति का प्रयोग होता है। एक शिक्षा सम्बन्धी समस्या का सम्बन्ध समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, राजनीतिशास्त्र आदि अनेक अनुशासनों से होता है। अतएव किसी शैक्षिक समस्या के समाधान के लिए अनुसंधानकर्ता को इन विभिन्न पक्षों पर भी विचार करना अनिवार्य हो जाता है।

5.शैक्षिक अनुसंधान के निर्णय प्राकृतिक विज्ञान की भाँति शुद्ध नहीं होते हैं। शिक्षा सामाजिक अथवा व्यावहारात्मक विज्ञान का ही एक भाग है । अत: इसके शोध परिणामों में विज्ञान की भांति सत्ता एवं विशिष्टता नहीं आ सकती है।

6. शैक्षिक अनुसंधान के लिए अनुसंधानकर्ता को विशेष होना आवश्यक नहीं है। शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक, प्रधानाध्यापक, निरीक्षण आदि सभी भागीदार होते हैं । अतएव ये सभी शैक्षिक अनुसंधान में भाग ले सकते हैं । प्रोफेसर कामत ने भी लिखा है कि कोई भी शिक्षक-जिसमें सामान्य समझदारी बुद्धि तथा सूझबूझ है-किसी समस्या पर अनुसंधान कर सकता है।

7. शैक्षिक अनुसंधान विस्तृत और सूक्ष्म दोनों स्तर पर होता है।

8. शैक्षिक अनुसंधान में परिकल्पना का निर्माण और निरीक्षण किया जाता है।

9. शैक्षिक अनुसंधान में प्रदत्तों को संकलित करने के लिए वैसे विश्वसनीयता तथा वस्तुनिष्ठ उपकरणों को प्रयोग करना चाहिए। कक्षा के दिन-प्रतिदिन के शिक्षण या विद्यालय के प्रशासन से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए अधिक मूल्यवान उपकरणों का होना आवश्यक नहीं है।

10. परिकल्पना के परीक्षण के लिए अनुसंधान करता आंकड़े तथा तथ्य एकत्रित करता है। शैक्षिक अनुसंधान में आवश्यक नहीं कि सभी प्रकार की समस्याओं के लिए संख्यात्मक प्रदत्त का संग्रह किया जाय। कभी-कभी आवश्यक रूप में संख्यात्मक तथ्यों का उपयोग शीघ्र कार्य में कृत्रिमता पैदा कर देता है।

11. शैक्षिक अनुसंधान को यांत्रिक नहीं बनाया जा सकता है।

12. शैक्षिक अनुसंधान शिक्षा दर्शन पर आधारित होता है।

13. प्राप्त निष्कर्ष प्रदत्तों के विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए । यदि संख्यात्मक प्रदत्त हैं तो उपयुफ्त सांख्याकीय विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

14. शैक्षिक अनुसंधान कार्य-कारण सम्बन्धों पर आधारित है।

4.2 शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता(Need of Educational Research)

आधुनिक समाज में शिक्षा को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यह व्यक्ति का व्यक्तिगत विकास करने के साथ-साथ समाज का उपयोगी उत्पादक, क्रियाशील संस्कृति सदस्य बनाती है। शिक्षा मनुष्य के मूल प्रवृतिजन्य पाशविक व्यवहारों का परिमार्जन कर उसको मानवता प्रदान करती है। इसके साथ ही शिक्षा राष्ट्र की भौतिक उन्नति में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्तियों में कार्य कुशलता बढा कर उत्पादन क्षमता का विकास करती है । समाज के लिए इतनी महत्वपूर्ण अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक है कि इसमें अनुसंधान कार्य निरन्तर चलता रहना चाहिए । निम्न दृष्टि से शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता अनुभव होती है--

1.शिक्षा कला और विज्ञान दोनों है। जहाँ तक शिक्षा कला है उस स्थिति में इसका सम्बन्ध शिक्षण से है जिसमे प्रभावशाली ढंग से ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। विज्ञान के रूप में शिक्षा व्यक्तियों के स्वभाव, उनकी वृद्धि और विकास, अधिगम के नियम, शिक्षा नीतियाँ तथा प्रशासन आदि सम्बंधित ज्ञान को रखती है। अनुसंधान के द्वारा अध्यापक की कुशलता में वृद्धि, शैक्षिक ज्ञान का विस्तार और शिक्षण कुशलता में सुधार किया जाता है।

2.शैक्षिक अनुसन्धान विज्ञान के विकास में सहायक होता है। यह ज्ञान के किसी एक सूक्ष्म अंग का विस्तृत, सम्पूर्ण एवं नवीन चित्र प्रस्तुत करता है। इसके द्वारा ज्ञान कोष में वृद्धि एवं विकास होता है।

3. विद्यालय में अध्ययन के लिए विभिन्न वातावरणीय पृष्ठभूमि से संबंधित छात्र-छात्राएं विद्यालयी शिक्षा प्राप्ति हेतु एकत्रित होते हैं। अनुसंधान द्वारा विभिन्न आयु, बुद्धि, लिंग तथा सामाजिक-आर्थिक समूहों से संबंधित छात्रों पर विविध वातावरण पृष्ठभूमि के प्रभाव का शोध करना आवश्यक है। यह अनेक अध्ययनों से सिद्ध हो चुका है कि परिवेश छात्र के सीखने की गति को प्रभावित करता है।

4. शैक्षिक अनुसंधान उद्देश्य प्राप्ति हेतु सर्वोत्तम साधन प्रदान करता है। उद्देश्यपूर्ण व्यवस्थित कार्यक्रम द्वारा कुछ निश्चित क्षणों की प्राप्ति करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन शिक्षा है । सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक दशाएं परिवर्तनशील होती है अतएव तदनुसार

क्रियाशील अनुसन्धान द्वारा हो संभव है।

5.शैक्षिक अनुसंधान रूढ़िगत विचारों एवं व्यवहारों में सुधार का मार्ग प्रस्तुत करता है। इसका रूप वैज्ञानिक होने के कारण इसमें
भ्रांतियों एवं सपुष्ट धारणाओं को स्थान नहीं है।

6. शिक्षा सम्बन्धी नवीन नीतियों तथा अभ्यासों का देश में लागू करने से पूर्व आवश्यक है कि शोध द्वारा उसके समस्त पक्षों पर विचार कर लिया जाये। हमारे देश में अभी तक नई नीतियों को आरम्भ करने से पूर्व अनुभवजन्य जाँच नहीं की जाती है। इसका परिणाम हम देख रहे हैं कि शिक्षा सम्बन्धी नवीन नीतियाँ सफलतापूर्वक लागू नहीं हो पाती है ।

7. विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है तथा प्रत्येक विषय में तीव्र गति से से नवीन सामग्री का भंडार बढ़ रहा है। अत: इस नवोन जान के शिक्षण के लिए अनुसन्धान द्वारा नवीन शिक्षण विधियों की खोज करना आवश्यक है।

8. शिक्षा विद्यालय में एक सामूहिक प्रयास होना चाहिए। इसमें अध्यापक, प्रशासन एवं छात्रों को समान रूप से भागीदार बनाने हो लिए आवश्यक है कि अनुसंधान द्वारा उन समस्याओं का समाधान किया जाये तो इनके सामूहिक प्रयास विघ्न डालते है। प्रशासन को प्रभावकारी बनाने के लिए अनुसंधान आवश्यक है।

9. अनुसंधान अध्यापक को चुस्त बनाता है तथा उसमें वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण का विकास करता है।

10. शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने मे बाधक कठिनाइयों में अनुसन्धान द्वारा ही हल किया जा सकता है। हम अपने 41 वर्ष के स्वतंत्रता काल में सम्पूर्ण देश में अभी तक शिक्षा को सार्वभौमिक नहीं बना सके हैं ।

मूलभूत अनुसंधान- इस प्रकार के अनुसंधान में विभिन्न घटनाओं के सम्बन्ध में मौलिकता , सिद्धान्तो व नियमों का शोध किए नाता है और इस अनुसंधान का उद्देश्य नवीन ज्ञान की प्राप्ति व वृद्धि तथा पुराने ज्ञान की पुनः परीक्षा द्वारा उसका शुद्धिकरण होता है। इस प्रकार के शोध में नवीन तथ्यों व घटनाओं का अध्ययन किया जाता है और साथ ही इस बात की जाँच भी की जाती है कि प्रचलित पुराने सिद्धान व नियम वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में ठीक है या नहीं । मौलिक अनुसंधान मे नवीन सिद्धान्त व नियमों की खोज नवीन परिस्थिति तथा नवीन समस्याओं के उत्पन्न होने पर की जाती है। इससे स्पष्ट है कि मौलिक मूलभूत अनुसंधान की प्रकृति सैद्धान्तिक होती है क्योकि इसका उद्देश्य ज्ञान को प्राप्ति, वृद्धि तथा शुद्धिकरण एण्ड्री आस ने मूलभूत अनुसंधान को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "मूलभूत अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य नयी रचनाओं का निर्माण करना है।"

इस प्रकार के अनुसंधान कार्य में संवेदनशील प्रक्रियाओं, उपकरणों तथा तकनीक का प्रयोग होता है तथा अनुसंधान के क्षेत्र को नियंत्रित रखा जाता है । इस प्रकार सामान्यीकरण विस्तृत क्षेत्र पर लागू होते हैं । मूलभूत अनुसंधान का संबंध सिद्धांत की रचना से होता है । इस पर तात्कालिक उपयोगिता विचार कोई प्रभाव नहीं डालता है ।

व्यवहृत अनुसन्धान-व्यवहारिक अनुसंधान का सम्बन्ध शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से सम्बन्ध विषयों तथा समस्याओं के सम्बन्ध में यथार्थ ज्ञान देना है। व्यवहृत अनुसंधान में वे शोध कार्य सम्मिलित किये जाते हैं जिनके द्वारा किसी समस्या विशेष का समाधान आवश्यक है। एण्ड्री आस ने व्यवहत अनुसंधान को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि तथ्यों द्वारा यदि अनुसंधानकर्ता किसी क्रियात्मक समस्या का समाधान करे तो कह सकते हैं कि इस प्रकार के अनुसंधान में नवीन ज्ञान की उपलब्धि, खोजे गये प्रत्यय, रचित नवीन सिद्धान्त और स्थापित नवीन

नियमों को विशिष्ट शैक्षिक परिस्थितियों में उपयोग में लाया जाता है। अनुसंधानकर्ता पहले से खोजे गये तथा सिद्धान्तों और सत्यों को नवीन परिस्थितियों में प्रयोग लाने की योजना बनाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान- क्रियात्मक अनुसंधान को स्पष्ट करते हुए कोरे महोदय ले लिखा है कि "कि क्रियात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है जिसे कोई भी व्यक्ति अपने उद्देश्य को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्राप्त करने के लिए परिचालित करता है। एक शिक्षक स्वयं अपने ही अध्ययन में सुधार लाने के उद्देश्य से क्रियात्मक अनुसंधान आरम्भ कर सकता है। इसी प्रकार विद्यालय प्रवन्धक अपने प्रबंध आरम्भ कर सकता है ।" क्रियात्मक अनुसंधान एक व्यक्ति के द्वारा अनेक व्यक्तियों के सहयोग द्वारा भी प्रारम्भ किया जा है। एकसी स्थिति तभी पैदा होती है। जब अनेक व्यक्ति एक ही समस्या से प्रभावित होते हैं। क्रियात्मक अनुसंधान तात्कालिक व्यावहारिक समस्या के समाधान के लिए प्रारम्भ किया जाता है। इसमें तात्कालिक समस्या को हल करने पर विशेष महत्त्व दिया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान के विविध चरण निम्नलिखित हैं -
1. समस्या का कथन, 2. स्थिति के लिए उत्तरदायी सम्भावित कारणों की सूची बनाना, 3. उपचार सम्बन्धी उपायों पर विचार करना, 4. उपचार सम्बन्धी उपयोग, 5. परिणामों का मूल्यांकन करना चूकि क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य केवल तात्कालिक समस्या के समाधान तक सीमित रहता है। इसलिए इस शोधकार्य में अधिक संवेदशील तकनीक प्रयोग को आवश्यकता नहीं होती है। क्रियात्मक अनुसंधान अन्य दो प्रकार के अनुसंधान से निम्न आधारों पर भिन्न होता है -

1. उसमें प्रशिक्षित तथा किसी विशेषज्ञ अनुसंधानकर्ता की आवश्यकता पड़ने पर शोधकर्ता बन जाते हैं।

2. यह समस्या सीमित जनसंख्या से सम्बन्धित होती है। अतः इसमें प्रतिदर्श की की आवश्यकता नहीं होती।

3 . समंको के संकलन के लिए किन्हीं विशेष उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती।

4 . तथ्यों के विश्लेषण लिए गहन सांख्यिकीय ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। इसमें विचरणात्मक सांख्यिकीय ज्ञान पर्याप्त होती है ।अनुमानात्मक संखियकी के प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती ।

क्रियात्मक शोध में अनुसंधानकर्ता को प्रारम्भ से ही निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए.

1, अध्ययन के समय घटना पा समस्या के वास्तविक क्रिया पक्ष पर ध्यान केन्दित रखना चाहिए।

2. शोधकर्ता को समस्या या घटना के सम्बन्ध में कुछ न कुछ ज्ञान अवश्य होना चाहिए। ऐसा न होने पर उस घटना या समस्या में अन्तर्निहित किसी भी क्रियात्मक पक्ष का यथार्थ अनुसंधान उसके लिए सम्भव नही होगा।

3. क्रियात्मक अनुसंधान में शोधकर्ता को अपने सहयोगियों का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

4.3 शैक्षिक अनुसंधान का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ आर्थिक-सामाजिक ढाँचा तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है, यहाँ शिक्षा को तात्कालिक दशाएँ बनाकर उसकी उपयोगिता को बदाने के लिए शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता को आज अधिक अनुभव किया जा रहा है। शैक्षिक अनुसंधान का महत्त्व निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट होता है:-

1 . अनुसंधान ज्ञान के विकास में सहायक है। उसके द्वारा ज्ञान-कोष में वृद्धि होती है। गुड तथा स्केट का कहना है कि विज्ञान का कार्य बुद्धि का विकास करता है तथा अनुसंधान का कार्य विज्ञान का विकास करना है। हम अभी तक विदेशों से आयोजित ज्ञान का उपयोग कर रहे हैं। विदेशी ज्ञान को देश की परिस्थितियों के अनुकूल बनाने के लिए अनुसंधान अति आवश्यक है।

2 . शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास करना है। व्यक्तित्व के विकास में अनेक प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष शक्तिमान क्रिया-प्रतिक्रिया करती है। इन क्रिया-प्रतिक्रिया को समझने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता होती है।

3. हर देश एवं काल में आदर्श मानव की धारणा बदलती है आदर्श मानव के निर्माण के लिए एवं काल के अनुसार अनुसंधान द्वारा उक्त प्रकार के दर्शन की रचना आवश्यक है। इस उद्देश्य को प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम-पुस्तक पाठ्यसहगामी क्रियाओं तथा शिक्षण विधि आदि के सम्बन्ध में अनुसंधान आवश्यक होता है।
4. देश में औद्योगीकरण से लाभ उठाने के लिए लोगों की मनोवृत्तियों को बदलना आवश्यक है। यह कार्य अनुसंधान द्वारा उचित शिक्षा व्यवस्था लाने से संभव होगा ।

5 . अनुसंधान रूढिगत विचारों एवं व्यवहारों में सुधार लाता है ।इसका कारण यह है कि अनुसंधान वैज्ञानिक होता है ।जिसमें भ्रांतियों के लिए कोई स्थान नहीं होता है ।

6 . अनुसंधान शिक्षकों के लिए अधिक महत्वपूर्ण है ।अनुसंधान अध्यापकोंको जिज्ञासु बनाता है ,उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक तथा चिन्तन वस्तुनिष्ठ बनाता है ।

7 . शैक्षिक अनुसंधान अनेक प्रशासनिक समस्याओं सुधाकर लाता है ।

8 . आज देश में पुनः निर्माण काल चल रहा है । यह कार्य योग्य कार्यकर्ताओ द्वारा ही संभव हो सकता है ।सुयोग्य कार्यकर्ताओ का निर्माण उचित शिक्षा प्रणाली की स्थापना से संभव है । उचित शिक्षा प्रणाली के विकास मैं अनुसंधान का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है ।

9. समाज में हो रहे परिवर्तनों तथा वैज्ञानिक प्रगति के कारण पाठ्यक्म नित्य समृद्ध होता जा रहा है। उसमें अनेक नवीन प्रकरणो जुड़ते जा रहे है। इन नवीन प्रकरणों का पदाने के लिए नवीन तथा उपयुक्त शिक्षण विधियों को आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता को पूर्ति में अनुसंधान को महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।